SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखण्ड के शैक्षणिक विकास में द युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड मिशन की भूमिका

सुनील कुमार वर्मा, शिक्षा विभाग
माँ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदमा, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुनील कुमार वर्मा

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 30/05/2023
Plagiarism : 00% on 22/05/2023

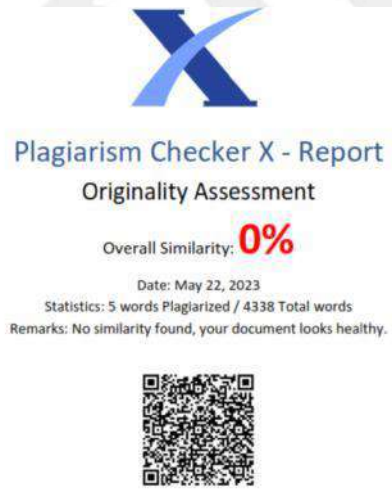

शोध सार

छोटा नागपुर की धरती जंगल एवं वनों से आच्छादित है। इन जंगलों में निवास करने वाले आदिम जनजाति कई वर्षों से जंगली उत्पादन पर निर्भर है। जंगल ही उनका आवास है। इन क्षेत्रों में बाहरी लोगों का प्रवेश ईसाई मिशनरियों के आगमन से आरंभ हुआ। ईसाई मिशनरियों ने इनके बीच रहकर इनके पिछड़ेपन का कारण समझते हुए, इनके बीच शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया। द यूनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैंड झारखण्ड के पुराने मिशनों में एक है। यह मिशन संथाल जनजातियों के बीच शैक्षिक एवं चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध है। इस मिशन की नींव डॉ. अलेक्जेन्डर डफ ने रखी थी। सन् 1871 ई. में कुछ चिकित्सकों एवं ईसाई धर्म प्रचारकों ने मिलकर इस मिशन की शुरूआत हजारीबाग जिले के गिरिडीह से कुछ दूर पचंबा क्षेत्र में किया। 1871 ई. में पंचबा में मिशन द्वारा 3 स्कूल की स्थापना किया गया। संथालों ने उनके उपदेश का जबाव दिया और बपतिस्मा की माँग की। पहले पाँच युवकों ने 1874 ई. में बपतिस्मा ग्रहण किया। मिशन ने कार्य–विस्तार करते हुए 1879 ई. में पचंबा के उत्तर 30 मिल की दूरी पर मुंगेर जिल के चकाई क्षेत्र के बामदा गाँव में और दूसरा पचम्बा से 30 मिल दक्षिण मानभूम जिला के पोखरिया में नये मिशन केन्द्र स्थापित किया। चौथा मिशन केन्द्र सन् 1908 ई. में पचंबा से 40 मिल उत्तर–पश्चिम में गावाँ थाना तीसरी में खोला गया था। मिशन स्थापना के 60 वर्ष के बाद सन् 1929 ई. में मिशन का नाम बदलकर 'संथाल मिशन ऑफ द चर्च ऑफ स्कॉटलैंड' कर दिया गया। मिशन ने धर्म परिवर्तन के क्षेत्र में बहुत कम उपलब्धियाँ हासिल की। मिशन की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियाँ शिक्षा, चिकित्सा और साहित्य के क्षेत्र में थी। मिशन शुरू से ही बालक–बालिकाओं दोनों की शिक्षा का प्रचार–प्रसार

किया। मिशन ने चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि हासिल की। मिशन की एक बड़ी विशेषता इसका मजबूत चिकित्सा कर्मचारी था। चार अग्रणरी मिशनरियों में से 3 चिकित्सक थे और 1934 ई. तक कार्यरत थे। मिशन के अधीक्षक एक डॉक्टर थे। तीन मिशन स्टेशनों में से प्रत्येक में एक अस्पताल था। बामदाह मिशन केन्द्र के अस्पताल ने नेत्र शल्य चिकित्सा में उत्तरी भारत में बहुत नाम और प्रसिद्धि हासिल किया। मिशनरियों ने चर्च के काम में संथाली भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित किया और उसके साहित्य में योगदान दिया। उन्होनें हिन्दी और बंगाली को भी समृद्ध किया। डॉ. एंड्रयू केम्पबेल ने संथाली भाषा और साहित्य की प्रगति के अद्‌भूत कार्य किया। ब्रिटिश सरकार ने इसे 'कैसर–ए–हिंद' से विभूषित किया। केम्पबेल को आदरपूर्वक 'एपोस्टल ऑफ संथाल' से विभूषित किया गया है। पोखरिया में मिशन का अपना एक प्रिटिंग प्रेस था। इस मिशन ने ईसाई समुदाय के धर्मांतरण और विस्तार की उपेक्षा समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक सेवा पर विशेष बल दिया।

मुख्य शब्द

बपतिस्मा, शल्य चिकित्सा, कैसर–ए–हिंद, धर्मप्रचारक, औषधालय.

प्रस्तावना

द युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड झारखण्ड के सबसे पुराने मिशनों में से प्रमुख मिशन है। यह मिशन संथाल जनजातियों के बीच शैक्षिक एवं चिकित्सा संबंधी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। इस मिशन की नींव डॉ. अलेक्जेंडर डफ ने रखी थी। भारत में इंग्लिश एजुकेशन के प्रसिद्ध वकील डॉ. अलेक्जेंडर डफ 1861–62 ई. में कर्नल डॉल्टन के साथ सर्दियों के मौसम में छोटा नागपुर एवं संथाल परगना पधारे। उन्होंने संथालों के स्थानीय मसीहा सैन्य अधिकारी ई. एन. पक्सेल एवं डब्लू. टी. स्टोर्स से मिलकर ईसा मसीह के उपदेशों एवं शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना आरंभ किया। सन् 1868 ई. में एक अन्य मिशन कार्यकर्त्ता डॉ. मिशेल ने संथाल परगना एवं छोटा नागपुर के विभिन्न स्थानों का निरीक्षण किया। परिणाम स्वरूप हजारीबाग जिले के गिरिडीह से लगभग तीन मील की दूरी पर स्थित पचंम्बा को मिशन का मुख्यालय बनाने में सहयोग किया।

सन् 1920 ई. में रेव. विलियम हेमिल्टन, एम. ए. पोखरिया मिशन का कार्यभार संभालने के लिए आये। 1920 ई. तक मिशन के धर्मांतरित ईसाईयों की संख्या 1737 थी। सन् 1921 ई. में रेव. (डॉ.) जेम्स ए. डायर 46 वर्षों तक मिशन में समर्पित एवं वफादार सेवा के पश्चात् सेवानिवृत हुए। इसके पश्चात् अक्टुबर 1921 ई. में डॉ. विलियम डेम्पस्टर ने मिशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पचम्बा मिशन केन्द्र में रहकर ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार का कार्य किया।

1925 ई. में जे. एम. मैकफेल के पुत्र रोनाल्ड एम. मैकफेल 20 वर्ष के मिशन सेवा के पश्चात् वे स्वदेश (स्कॉटलैण्ड) लौट गए। दोनों पिता–पुत्र मिशन का वामदाह मिशन केन्द्र में सेवा करते थे। मिशन ने संथाल मिशन्स ऑफ नॉर्थ चर्च, द अमेरिकन बैपटिस्ट मिशन और अमेरिकन मेथोडिस्ट मिशन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध एवं मिल–जुलकर कार्य किया। जिससे मिशन का कार्यक्षेत्र और भी ज्यादा बढ़ गया। संथाली क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा था। इनके धर्म प्रचार के लिए यह आवश्यक था कि क्षेत्रीय भाषा (संथाली) में धार्मिक पुस्तकों का अनुवाद हो। अतः उन्होंने संथाली भाषा में ईसाई धर्म के पुस्तकों का अनुवाद करवाया। 15 जून, 1929 ई. को मिशन के महत्वपूर्ण धर्मप्रचारक डॉ. जेम्स एम. मैकफेल ने अपनी 40 वर्ष की सेवा के पश्चात् निधन हो गया। जिसे वामदाह मिशन केन्द्र में दफनाया गया। डॉ. मैकफेल अपने 40 वर्ष की मिशन सेवा वामदाह केन्द्र में किया। इस मिशन के स्थापना के 60 वर्ष बाद सन् 1929 ई. में 'संथाल मिशन ऑफ द चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड' नवीन नाम से जाना जाने लगा। 1930 ई. डॉ. डी. डब्लू टायलर वामदाह मिशन केन्द्र पहुँचे। मिशन के 4 स्टेशनों में धर्मांतरित ईसाईयों की संख्या–1862 थी। 1933 ई. में डॉ. विलियम डेमपास्ट अपने वतन स्कॉटलैण्ड लौट कर आ गए। पचम्बा अस्पताल में उनके स्थान पर डॉ. अलेक्जेंडर पाल को मिशन की सेवा का कार्य दिया गया। 1934 ई. में तिसरी मिशन केन्द्र के डॉ. जेम्स किचिन को पीड़ितों की सेवा करने हेतु 'कैसर–ए–हिन्द' के खिताब से नवाजा गया। मिशन संथाल ईसाई परिषद् (संथाल क्रिश्चियन कौंसिल) का सदस्य बन गया। सन् 1935 ई. में बिहार एवं

उड़ीसा में संथालों के बीच कार्य करने के लिए नौ (09) ईसाई मिशनरियों का गठन किया गया था जिसे संथाल क्रिश्चियन कौंसिल कहा गया। नवम्बर, 1935 ई. में रेव. डोनाल्ड डेविडसन पचम्बा मिशन केन्द्र आए एवं वहाँ का कार्यभार संभाला। वहाँ का मिशनरी एक चिकित्सा कर्मी था। मिशनरी के अधीक्षक एक उच्च शैक्षिक योग्यता वाले होते थे। सन् 1947 ई. तक मिशन में चार मिशन केन्द्र, चार यूरोपीय मिशनरी, चार भारतीय पुजारी, सात एजीलवादी, अठाइस बुजुर्ग (ईसाई), 11 स्थानीय मिशन केन्द्र एवं 2571 धर्मांतरित ईसाई थे। इस मिशन के चार प्रमुख केन्द्र पचम्बा, बामदा, पोखरिया और तिसरी था एवं मिशन के ग्यारह (11) स्थान केन्द्र गिरिडीह, बारीटांड़, झलकडीह, हारोडीह, बसहा, पोखरिया, बुधवाडीह, बरटोली, बंगी, कोल्हार एवं जमडीहा थे।

शोध उद्देश्य

द युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्टॉकलैण्ड शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में योगदान को उजागर करना तथ विभिन्न स्रोतों के आधार पर झारखण्ड के शिक्षा और संस्कृति के विकास में स्कॉटिशट मिशन द्वारा किये गये सामाजिक–सांस्कृतिक एवं मानवीय परिवर्तनों को उजागर करना।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया हैं। साथ ही प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध–कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

ईसाई मिशनरियों ने झारखण्ड आगमन से ही शिक्षण संस्थानों का विकास किया जाने लगा। झारखण्ड के अनाथ बच्चों के लिए अनाथालय में अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन एवं अच्छी सरकार देकर स्थानीय लोगों का ईसाई धर्म के प्रति विश्वास जीता। मिशनरियों ने संवाद के लिए हिन्दी, संथाली एवं मुण्डारी को विद्यालय एवं महाविद्यालय में शिक्षा का माध्यम बनाया।

शैक्षिक विकास

युनाईटेड मिशन ऑफ फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड ने शिक्षा के विकास में अपना काफी योगदान दिया। मिशन द्वारा बालक एवं बालिका शिक्षा के विकास के लिए विद्यालयों की स्थापना की गई। मिस्टर वर्णलेक्स ने 1869 ई. में पचम्बा में एक विद्यालय की स्थापना किया। उनकी सहायता में एक बंगाली एवं एक संथाली ईसाई का काफी योगदान रहा। उस समय संथाली जनजातियों के बीच शिक्षा एक नई बात थी। वहाँ के संथालों में बहुत कम लोग ऐसे होते थे जो शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। 1871 ई. में पचम्बा में मिशन द्वारा तीन स्कूलों की नींव रखी गई। इस स्कूल में बच्चों की संख्या बहुत कम थी। इसका मुख्य कारण उसकी गरीबी एवं आर्थिक तंगी थी। मिशन की वार्षिक रिपोर्ट के मतानुसार 1872 ई. में स्कूलों की संख्या–03 थी। पचम्बा में लड़कों के लिए एक बोर्डिंग स्कूल एवं ग्रामीण क्षेत्रों में दो स्कूल थे जिसमें कुल 35 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। सन् 1873 ई. में पचम्बा में लड़कियों के लिए एक बोर्डिंग स्कूल की स्थापना की गई जिसको (छह) छात्राएँ अध्ययनरत् थी। इस बालिका बोर्डिंग स्कूल की स्थापना के लिए स्कॉटलैण्ड में महिला विदेशी मिशन ने अनुदान (फंड) दिया था। मिशन के वार्षिक रिपोर्ट के मतानुसार, 1873 ई. में पचम्बा में एक बालक आवासीय विद्यालय में 32 विद्यार्थी एक बालिका बोर्डिंग स्कूल के 6 छात्राएँ, 5 ग्रामीण स्कूलों में 50 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। इन विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए 8 पुरूष शिक्षक एवं 01 महिला शिक्षिका कार्यरत थी। सन् 1875 ई. तक मिशन के लड़कों के बोर्डिंग स्कूल में 44 छात्र, बालिका बोर्डिंग स्कूल में 23 छात्राएँ एवं ग्रामीण स्कूलों में कुल 79 विद्यार्थी अध्ययनरत थे।

1876 ई. की मिशन की वार्षिक रिपोर्ट यह बताती है कि पचम्बा क्षेत्र के बालकों के बोर्डिंग स्कूल को शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में परिणत किया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना था। यहाँ के स्कूलों में बालकों को हिन्दी एवं संथाली पढ़ाया जाता था। इसमें से कुछ तेज विद्यार्थियों को अंग्रेजी की भी शिक्षा दी जाती थी। उस वर्ष मिशन के पचम्बा में दो बोर्डिंग स्कूल एवं

गाँवों में 9 ग्रामीण स्कूल थे। स्कूल के सब–इंस्पेक्टर इन स्कूलों का निरीक्षण किया करते थे। इससे स्कूलों में किसी प्रकार की गड़बड़ी की संभावना नहीं रहती थी। 1877 ई. में मि. डब्लु. एच. स्टीवेन्सन एक प्रशिक्षित शिक्षक एवं धर्मप्रचारक का आगमन हुआ। उन्होंने इन स्कूलों के शैक्षिक पदभार की जिम्मेदारी लिया। 1879 ई. तक मिशन के पचम्बा केन्द्र में एक बालक बोर्डिंग स्कूल एवं पाँच ग्रामीण स्कूल संचालित थे जिसमें कुल 87 बालक एवं 29 बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। डॉ. एण्ड्रयू कैम्पबेल ने पोखरिया मिशन केन्द्र में एक नए स्कूल की स्थापना की। सन् 1880–81 ई. के दौरान संथालों के बीच अशांति का माहौल था। सरकार ने संथालों के बीच अशांति का माहौल की समाधान के लिए शिक्षा के माध्यम से जागरूक करने का प्रयास किया। टुण्डी थाना के अन्तर्गत एक नवीन स्कूल की स्थापना के लिए 600 रू. का अनुदान सरकार द्वारा दिया गया। इसे पोखरिया मिशन केन्द्र से जोड़ दिया गया था। सन् 1882 ई. तक स्कॉटलैण्ड मिशन के द्वारा अनुदान की राशि (मात्रा) में कमी होने के कारण पोखरिया स्थित स्कूल को बंद कर दिया गया था। अगले वर्ष सरकार ने हजारीबाग जिले के सभी संथाल गाँवों के ग्रामीण स्कूलों को पचम्बा मिशन की देखरेख के लिए सौंप दिया। सरकार द्वारा शिक्षकों के वेतन का भुगतान किया जाता था एवं मिशन ने संथाल ईसाईयों को सर्कल इंस्पेटक्र के रूप में नियुक्त किया। सन् 1884 ई. में पोखरिया में मिशन स्कूल पुनः खोला गया और वामदा मिशन केन्द्र में एक नवीन स्कूल की स्थापना की गई। एण्ड्रयू कैम्पबेल के कोल्हार नामक स्थान पर मिशन कार्यकर्त्ता कार्य करने लगे। डॉ. विल्सन ने अपने दोस्त, दार्शनिक एवं मागदर्शक डॉ. एण्ड्रयू कैम्पबेल के सम्मान में पोखरिया मिशन केन्द्र में 1886 ई. को एक सुंदर गिरिजाघर की नींव रखी गई। सन् 1889 ई. में गिरिडीह और पचम्बा में भी दो सुंदर गिरिजाघर का निर्माण किया गया। इन स्थानों पर कई विद्यालयों की स्थापना किया जाने लगा। इस क्षेत्र के लोग मिशन की सदस्यता ग्रहण करने लगे एवं अपने बच्चों को शिक्षित एवं जागरूक करने के लिए मिशन के स्कूलों में बच्चों को भेजने लगे थे। 1885 ई. में पोखरिया में ईसाई लड़कियों के लिए एक अलग स्कूल भी स्थापित किया गया। सन् 1887 ई. में मिस. ई. स्प्राट एवं मिस हेटली का आगमन हुआ एवं पचम्बा मिशन के बालिका बोर्डिंग स्कूल का कार्यभार संभाली। बालिका विद्यालय के संचालन के लिए एवं नारियों के बीच काम करने के लिए सन् 1892 ई. मिस मेरी एवं जेस्सी गिलक्राइस्ट का आगमन हुआ। इस मिशन के कार्यकर्त्ता, पचम्बा, शोलापुर, बारीटाँड़, मधुपुर, पालगंज, गिरिडीह, पोखरिया एवं हजारीबाग इत्यादि क्षेत्रों में पश्चिमी शिक्षा, संस्कृति एंव ईसाई धर्म प्रचार–प्रसार का काम करने लगे थे। सन् 1888 ई. में हैजा बीमारी से अन्य लोगों को बचाने में डॉ. स्टीवेन्सन का निधन हो गया। मिशन ने एक योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक को खो दिया। मिशन का आरंभ से ही लक्ष्य अपने मिशन के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना था। इसके लिए मिशन द्वारा पचम्बा में एक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय संचालित किया गया था।

सन् 1891 ई. में मिशन द्वारा हिन्दू एवं मुस्लिम बाहुल क्षेत्र के बालकों के लिए एक स्कूल की स्थापना की गई, जिसमें 42 छात्राएँ पढ़ती थीं। मिशन द्वारा स्कूल की स्थापना का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देना था। मिशन द्वारा मुख्य रूप से तीन प्रकार के विद्यालय स्थापित किए गए थे– प्रथम छात्र–छात्राओं के प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना गई थी। दुसरा सुदुर ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण स्कूलों का संचालन मुख्य रूप से मिशनरी ही किया करते थे। इन स्कूलों को सरकारी अनुदान भी प्राप्त होता था। 1897 ई. में इन मिशनरी द्वारा संचालित स्कूलों की संख्या 38 हो गई थी। इस स्कूल को सुचारू रूप से संचालन के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा 2000/– रूपये की अनुदान राशि प्रदान की गई थी। इन स्कूलों में 33 शिक्षक एवं 2 निरीक्षक की नियुक्ति की गई थी। तीसरा इस मिशन के माध्यम से कई औद्योगिक प्रशिक्षण स्कूल की स्थापना की गई थी जिसमें रोजगार के लिए प्रशिक्षण दिया जाता था। इस मिशन के वार्षिक रिपोर्ट 1894 ई. के मतानुसार "मिस.एनी 1894 ई. में पचम्बा आई। 1896 ई. में सुश्री हेरियट पचम्बा आई। सुश्री जेनेट गिलक्राइस्ट 1894 ई. तक मिशन में कार्यरत रही। इस मिशन के प्रमुख केन्द्र पोखरिया में इनके द्वारा अस्पताल खोला गया था जहाँ रोगियों का ईलाज एवं चिकित्सा सेवा निःशुल्क किया जाता था। 12 जून 1897 ई. को एक भूकम्प आया था और अकाल पड़ा था। गिरिडीह में उन आकाल पीड़ित लोगों की सेवा इस मिशन के कार्यकर्त्ता द्वारा किया गया।

मिशनरी ने लोगों के कृषि कार्य में भी सहयोग किया। मिशन के माध्यम से गाँवों में कई तालाब खुदवाये गए।

अनाथ बच्चों के लिए निःशुल्क भोजन एवं शिक्षा की व्यवस्था की गई। ग्रामीण महिलाओं को सिलाई, बुनाई के कार्यों का प्रशिक्षण भी दिया गया। संथालों के बीच रहकर अपनी सेवाएँ देने के लिए एण्ड्रयू कैम्पबेल को ब्रिटिश सरकार की ओर से 'कैसर–ए–हिन्द' की उपाधि से नवाजा गया। कैम्पबेल को आदरपूर्वक 'एपोस्टल ऑफ–संथालस' से विभुषित किया गया। कैम्पबेल पर रेव. जे. एच. विल्सन के कार्यों का काफी प्रभाव पड़ा इसके पश्चात् उन्होंने जीवन की अमूल्य पल लोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दिये। कैम्पबेल द्वारा पोखरिया में लोगों के बीच रहकर कोट, कचहरी से संबंधित कई न्यायिक कार्य, साहित्यिक एवं उद्योगों को बढ़ावा देने वाले कार्य को मन से किया। पोखरिया कोर्ट में लोग अपने मुकदमों से संबंधित परिचर्चा के लिए कैम्पबेल से मिलते रहते थे। कैम्पबेल उन्हें उचित न्याय दिलाने हेतु कोशिश करते रहते थे। कैम्पबेल को दो बार लेजिस्लेटिव कौंसिल का सदस्य बनाया गया। वे पटना विश्वविद्यालय के कला संकाय के सदस्य नियुक्त किए गए। वे मानभूम डिस्ट्रिक बोर्ड एवं धनबाद लोकल बोर्ड के सदस्य बनाये गये। डॉ. ए. कैम्पबेल संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने अंग्रेजी कहानियों को संथाल भाषा में अनुवादित किया। वे संथालों के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए एक मासिक पत्रिका 'धारवाक' का प्रकाशन किया। इस पत्रिका का प्रकाशन कुछ वर्षो के बाद बंद कर दिया गया था। बाइबल का संथाली भाषा में अनुवाद करवाया गया। उन्होंने संथाली भाषा के भजन श्रृंखला की रचना की। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की। अंग्रेजी पुस्तक जैसे– 'द स्टोरी ऑफ जोसेफ एंड पोप ऑफ द डे इन टु संथाल' का संथाली भाषा में अनुवाद किया। कैम्पबेल महोदय 'संथाल–इंग्लिश डिक्शनरी' प्रकाशित करने के कारण काफी चर्चित रहे। यह शब्दकोष 706 पृष्ठों वाला एवं 20,000 से अधिक शब्दों वाला एक अमूल्य पुस्तक था जिसका प्रकाशन 1902 ई. में किया गया था। इस शब्दकोष को तैयार करने में रेव. डब्लु. ई. व्हाइट एवं अन्य सहयोगियों का हाथ था। रेव. ए. कैम्पबेल ने पोखरिया में एक प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की थी जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली एवं संथाली भाषा में पुस्तक की छपाई की जाती थी। वामदा के डॉक्टर आर. एम. मेंकफेल ने 'संथाली व्याकरण' की रचना की। संथाली ईसाई परिषद के द्वारा इन सब कार्यों को पूर्ण किया गया। सन् 1940 ई. में पटना विश्वविद्यालय द्वारा 'संथाली' को मैट्रिक में एक विषय के रूप में मान्यता दी गई। संथाली भाषा के विकास में संथाल ईसाई परिषद् एवं युनाइटेड मिशन ऑफ स्कॉटलैण्ड का महत्वपूर्ण भूमिका था। डॉ. ए. कैम्पबेल का औद्योगिक क्षेत्र में बड़ा योगदान है। ए. कैम्पबेल नए उद्योगों को शुरू करने या संथालों के बीच पहले से मौजूद उद्योगों को सुधारने में बड़ी रूचि रखते थे। पोखरिया में मिशन केन्द्र स्थापना के पश्चात् एक औद्योगिक स्कूल पोखरिया में आरंभ किया गया। ए. कैम्पबेल ने संथालों को ईंट बनाने का कार्य सीखाकर, राजमिस्त्री बनाने के लिए प्रेरित किया। संथालों को व्यापार, पुशपालन, कृषि कार्य, बागवानी, बढ़ईगिरी, छपाई, चिनाई, लौह का काम, रेशम का काम, ईंट बनाने का कार्य, राजमिस्त्री का कार्य, अरंडी के तेल की खेती, किताब बांधना, फीता बनाना आदि कार्य सीखाते थे। 1901 ई. में उनके द्वारा स्थापित प्रिटिंग प्रेस में 20 मजदूर कार्यरत थे। वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में भी कैम्पबेल की गहरी रूचि थी। संथाल परगना क्षेत्र में उन्होंने सैकड़ों पौधा रोपन किया। मत्स्य पालन एवं पालतु पशुओं में भी वे काफी दिलचस्पी रखते थे। छोटा नागपुर के उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी अब आर्थिक रूप से समृद्ध होने लगे थे, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में तकनीकी एवं औद्योगिक क्षेत्र को प्रश्रय दिया था। सन् 1889 ई. लड़कों के लिए दो प्रशिक्षण विद्यालय पोखरिया एवं पचम्बा में संचालित हो रहा था जिसमें 130 विद्यार्थी थे। पोखरिया में एक औद्योगिक प्रशिक्षण स्कूल में 18 विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। मिशन के 47 बालक विद्यालय में 871 बालक एवं 07 बालिका विद्यालय में 143 बालिकाएँ अध्ययनरत थीं। सन् 1905 ई. में ऐसे स्कूलों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। अब तक स्कूलों की संख्या बढ़कर 91 हो गई थी। 1913–14 ई. के दौरान मानभूम जिला बोर्ड ने आदिवासियों के लिए 40 नए स्कूल खोलने की मंजूरी दिया। डॉ. एण्ड्रयू कैम्पबेल को उन स्कूलों को खोलने एवं संचालित करने का कार्यभार मिला। सन् 1915 ई. तक मिशन के 152 स्कूलों में 2765 विद्यार्थी अध्ययनरत थे जिसमें 414 बालिकाएँ शिक्षण प्राप्त कर रही थीं।

1927 ई. में पोखरिया के बालक विद्यालयों को मिडिल वर्नाकुलर स्टैण्डर्ड में परिणत कर दिया गया। अगले वर्ष पचम्बा के बालिका विद्यालय को मिडिल वर्नाकुलर में परिणत किया गया। हजारीबाग जिला बोर्ड द्वारा जिले के कई स्कूलों में दी जाने वाली अनुदान की मात्रा में कमी कर दिया गया। वित्तीय स्थिति कमजोर होने के कारण मिशन को गाँव के कई स्कूलों को बंद करना पड़ा था। अधिकांशतः लड़कियों के प्राथमिक स्कूलों को लड़कों के

प्राथमिक स्कूलों में जोड़ दिया गया। सन् 1932 ई. में मिशन के 65 स्कूलों में 1323 विद्यार्थी अध्ययरत थे तब से विद्यालयों और छात्रों का उत्थान एवं पतन शुरू हो गया। सन् 1937 ई. तक मिशन में लड़कियों के लिए 48 बालक विद्यालय, 3 बालिका विद्यालय एवं 36 बालक एवं बालिका दोनों के लिए विद्यालय संचालित थे जिसमें 1531 लड़के एवं 205 लड़कियाँ अध्ययनरत थीं। 1947 ई. तक मिशन के स्कूलों में 1469 छात्र अध्ययनरत् थे।

चिकित्सा सेवा

द युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड मिशन का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा, शैक्षिक, साहित्यिक एवं अन्य परोपकारी कार्य था। मिशन के पंचबा पहुँचने के तुरंत बाद चिकित्सा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मिशन के प्रारंभिक चार मिशनरियों में से तीन मिशनरी चिकित्सा कर्मी के रूप में थे एवं 1934 ई. तक इस मिशन का अधीक्षक के रूप में एक डॉक्टर्स थे। मिशन के चार प्रमुख मिशन केन्द्रों में से केवल पोखरिया मिशन केन्द्र ही एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ कोई अस्पताल विद्यमान नहीं था। बामदाह मिशन केन्द्र का अस्पताल उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ नेत्र एवं शल्य चिकित्सा के रूप में विख्यात था। रेव. डॉ. आर्कीपोल्ड टेम्पलटन के आगमन के पश्चात् पचम्बा में 1871 ई. में मिशन द्वारा पहला अस्पताल स्थापित किया गया। उस अस्पताल में 8 बेड (बिस्तर) बनाया गया था जो डॉ. ए. कैम्पबेल द्वारा स्थापित किया गया। 1875 ई. में डॉ. डायर का आगमन हुआ, वे इस अस्पताल में नियुक्त हुए। वे अक्सर अन्य मिशन केन्द्रों का दौरा किया करते थे और शिविरों में जाकर रेगियों का ईलाज करते थे। 1879 ई. में डॉ. ए. कैम्पबेल ने पोखरिया मिशन केन्द्र की स्थापना की तथा वहाँ एक औषधालय की नींव रखी। पोखरिया मिशन औषधालय में एक भारतीय ईसाई चिकित्सक द्वारा मरीजों का ईलाज किया जाता था जो पूर्व में पचम्बा के डॉक्टर्स डायर के अधीन कार्यरत थे। 1884 ई. में डॉ. एण्ड्रयू कैम्पबेल ने पोखरिया मिशन केन्द्र छोड़कर बामदाह मिशन केन्द्र के आसपास के क्षेत्रों में बीमार रोगियों की देखभाल की। 1889 ई. में पहले मिशनरी निवासी के रूप में डॉ. जे. एम. मैकफेल एवं डॉ. डायर ने अपना योगदान दिया था। इस अस्पताल में डॉ. जे. एम. मैकफेल द्वारा पहले रोगी के आँख की मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया गया था। रोगी का ईलाज करने से पूर्व मोतियाबिन्द का ऑपरेशन हेतु तैयार करने के लिए 5 रूपये अस्पताल द्वारा दिया गया था। सन् 1891 ई. में पचम्बा मिशन अस्पताल में 9830 रोगियों का ईलाज एवं बामदाह मिशन केन्द्र में 2433 रोगियों का ईलाज किया गया था। 1894 ई. में बामदाह में एक अस्पताल की स्थापना की गई थी। मिशन ने सन् 1894 ई. में छोटा नागपुर में 25 वर्ष की सेवा पूरी की। इस दौरान 1,00,000 रोगियों का ईलाज किया गया जिसमें सैकड़ों रोगियों के आँखों के ऑपरेशन के पश्चात् उसकी नेत्र की ज्योति वापस आई। सन् 1895 ई. तक मिशन के तीन मिशन केन्द्रों पचम्बा, बामदाह एवं पोखरिया में नियमित रूप से चिकित्सा कार्य द्वारा रोगियों का ईलाज किया जाता था। सन् 1900 ई. में मिशन से जुड़े विभिन्न औषधालयों और अस्पतालों में 12000 से अधिक रोगियों का ईलाज किया गया था। सन् 1908 ई. में डॉ. किचिन द्वारा एक नया मिशन केन्द्र तिसरी में स्थापित किया गया था। तिसरी मिशन केन्द्र में अभ्रक मालिकों द्वारा एक औषधालय एवं एक छोटा अस्पताल का निर्माण किया गया। अभ्रक व्यापार में मंदी के कारण तिसरी में अस्पताल एवं औषधालय को बंद कर दिया गया था। डॉ. किचिन ने उन बंद अस्पतालों एवं औषधालय में रोगियों की सेवा करना आरंभ कर दिया। 1908 ई. के दौरान मिशन के अस्पतालों एवं औषधालयों में 11,967 रोगियों का ईलाज किया गया था। सन् 1915 ई. में मिशन के अस्पतालों में लगभग 25,000 रोगियों का ईलाज किया गया। मुंगेर जिला बोर्ड बामदाह अस्पताल को 50 रू. मासिक अनुदान देने का निर्णय लिया। 1916 ई. में तिसरी में एक नया अस्पताल एवं औषधालय का निर्माण किया गया। बिहार सरकार द्वारा इस अस्पताल के भवनों का निर्माण के लिए 1000 रू. का अनुदान दिया गया। सन् 1921 ई. में मिशन के अस्पतालों एवं औषधालयों में 20,000 रोगियों का ईलाज किया गया था।

सन् 1925 ई. तक मिशन के तीन अस्पतालों में 4227 नेत्र रोगियों का ऑपरेशन एवं 978 सामान्य रोगियों के ऑपरेशन का सफल ईलाज हुआ। बामदाह मिशन केन्द्र में डॉ. जे. एम. मैकफेल एवं श्रीमति मैकफेल के अतिरिक्त उनके पुत्र डॉ. रोनाल्ड मैकफेल मिशन की सेवा में नियुक्त थे। सन् 1925 ई. के वर्षा के दौरान सर गणेश दत्त सिंह बिहार के स्थानीय स्वशासन मंत्री पचम्बा के मिशन अस्पताल आए। उन्होंने इस अस्पताल के कार्यों को ध्यान में रखते हुए उसका काफी गुणगान किया एवं डॉ. डायर की स्वीकृति में एक औषधालय तथा ड्रेसिंग रूम के निर्माण के लिए

1000 रू. का अनुदान दिया। उन्होंने रेगियों के आराम के लिए 500 रू. का अनुदान दिया। उन्होंने अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में यह उल्लेख किया कि भारत की जनता को चिकित्सा से राहत प्रदान करने के लिए अस्पतालों की काफी आवश्यकता थी। इस अस्पताल से पूर्व गाँवों में प्राचीन तौर–तरीके से ईलाज चल रहा था जिसमें गाँवों के लोग सहज ही ईलाज करवा पाते थे। सन् 1934 ई. में पचम्बा, बामदाह एवं तिसरी मिशन अस्पतालों में ईलाज किए गए रोगियों की संख्या– 24107 थी जिसमें 4000 से अधिक रोगियों के नेत्र का आपरेशन हुआ था। मिशन के वामदाह केन्द्र में 3854 रोगियों के नेत्रों का ऑपरेशन किया गया था। सन् 1947 ई. के मिशन आँकड़ें के अनुसार मिशन में तीन अस्पताल, एक औषधालय, तीन यूरोपियन चिकित्सक, एक भारतीय चिकित्सक, 18 (अठारह) चिकित्सा सहायक कार्यरत थे जिसमें 19512 रोगियों का ईलाज एवं 7856 रोगियों का ऑपरेशन द्वारा ईलाज किया गया था।

निष्कर्ष

द युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड मिशन ने शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा संथाली, हिन्दी एवं अंग्रेजी को बनाया। मुण्डारी, संथाली एवं कैथी भाषा के माध्यम से आदिवासियों को कानून के अधिनियमों से परिचित करवाया जिस कारण वे अपने अधिकार को समझ पाये। ईसाई मिशनरियों ने अपनी सेवा भाव से आदिवासी लोगों के बीच विद्यालय रूपी उपहार दिया। ईसाई धर्मप्रचारकों ने प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयों की स्थापना और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्य के लिए सभी एक स्वर में मिशनरियों की सराहनीय भूमिका को स्वीकार करते हैं। सरकारी व्यास्था ने शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य नहीं किया। वह कार्य इन ईसाई धर्मप्रचारकों ने कर दिखाया। झारखण्ड के कई जिलों के छोटे–बड़े शहरों से लेकर गाँव–देहातों, जंगलों तक मिशन के विद्यालय फैले हुए हैं। मिशन के इन विद्यालयों में शिक्षक की व्यवस्था गुणवतापूर्ण होती है। इसके द्वारा संचालित विद्यालय सभी दृष्टि से प्रशंसा के योग्य है।

संदर्भ सूची

1. खलखो आभा, (2015), *ब्रिटिशकालीन झारखण्ड के कुछ ऐतिहासिक अध्याय,* जेवियर पब्लिकेशन्स, राँची, पृ. 53–54।
2. वीरोत्तम बी., (2017), *झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 554।
3. मैकफेल जे. एस., (1904), *मिशन्स ऑफ युनाइटेड की चर्च ऑफ स्टॉटलैण्ड,* संथालिया मिशन प्रेस, पोखरिया, मानभूम, पृ. 112।
4. महतो सरयु, (1971), *हण्डरेड इयर्स ऑफ क्रिश्चियन मिशन्स ऑफ छोटा नागपुर सिन्स–1845,* छोटा नागपुर क्रिश्चियन पब्लिशिंग हाउस, राँची, पृ. 126।
5. कालापुरा जोसे, (2014), *क्रिश्चियन मिशन इन बिहार एण्ड झारखण्ड टिल–1947,* क्रिश्चियन वर्ल्ड इंप्रिंट, दिल्ली, पृ. 170।
6. सिन्हा एस. पी., (1993), *कंफिलक्ट एण्ड अेंशन इन ट्राइब्ल सोसायटी,* कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1993, पृ. 122–123।
7. एनुअल रिपोर्ट ऑफ संथाल मिशन ऑफ फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड, 1925, पृ. 3, 11, 19।
8. खलखो आभा, (2010), *हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन झारखण्ड (1845–1947),* एस. के. पब्लिशिंग कम्पनी, राँची, पृ. 43।
9. कालापुरा जोसे, (2014), *क्रिश्चियन मिशन इन बिहार एण्ड झारखण्ड टिल–1947,* क्रिश्चियन वर्ल्ड इंमप्रिंट, दिल्ली, पृ. 207–208।
10. www.christianmissionindia.org/index.Php
11. www.christinanity-in-Bihar.htm

****